International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

प्राचीन भारतीय इतिहास में प्रचलित सती प्रथा एवं उसका स्वरूप

धीरेन्द्र कुमार सिंह
एम0फिल0 (इतिहास)
यू0जी0सी0 नेट (इतिहास)

सती का शाब्दिक अर्थ है– अमर अथवा सत्य पर स्थिर रहने वाली, जो पति–पत्नी का अटूट और अविच्छेद सम्बन्ध भी व्यक्त करता है। दूसरे शब्दों में इसका अर्थ धर्म के प्रति एकनिष्ठ होकर अपने उज्ज्वल चरित्र की कीर्ति द्वारा संसार में अमर होने वाली स्त्री।

सती शब्द की अभिव्यक्ति के लिए प्राचीन साहित्य में अन्वारोहण अर्थात् मृत पति के साथ चिता पर चढ़ना, सहगमन मृत पति का अनुगमन करना, सहभरण मृत पति के साथ मरना। अनुमरण अर्थात् यदि पति की मृत्यु विदेश प्रवास काल में हो गई हो तो उसका समाचार जानने के बाद उसके पीछे मरना आदि अनेक शब्द प्रचलित हैं। इन शब्दों के व्यवहार से स्पष्ट होता है कि विवाहोपरान्त पति–पत्नी का जीवित अवस्था में अत्यन्त प्रगाढ़ व पावन सम्बन्ध होता था। पति के मरने के बाद परलोक और जन्मान्तर में भी उसी तरह अटूट बना रहता है। सती प्रथा केवल भारत में ही नहीं अपितु मिश्र, स्लाव, रोम, यूनान आदि अनेक देशों में थी। जहाँ मृत पति के साथ पत्नियों को भी जीवित ही दफन कर दिया जाता था।

प्रायः सभी धर्मशास्त्रकार सती प्रथा के पक्षधर थे। व्यास और दक्ष सती धर्म को विधवा के जीपन का सर्वोत्तम विकल्प स्वीकार करते थे।[1] जो विधवा के लिए स्वर्ग से भी बढ़कर महत्वशाली था। बृहत् संहिता के अनुसार विधवा के लिए सती होना श्रेयस्कर है।[2]

सती प्रथा के सम्बन्ध में गुप्तकालीन अभिलेखीय प्रमाण भी मिलते हैं। हूणों (510ई0) के विरुद्ध लड़ाई में मृत सेनापति गोपराज की पत्नी अभिराशि में प्रविष्ट होकर सती हो गई

[1] व्यास स्मृ0 2/53, दक्ष स्मृ0
[2] बृहत् संहिता, 84/16

थी।[3] पुराणों में भी सती प्रथा के अनेक प्रसंग विद्यमान हैं। श्रीकृष्ण की मृत्यु हो जाने पर रुक्मिणी आदि उनकी पत्नियों ने उनके मृत शरीर का आलिंगन कर अग्नि में प्रवेश किया था।[4] अपने पति बलराम के मृत होने पर रेवती सती होने के निमित्त आह्लादपूर्वक उनके शरीर का आश्लेषकर शीतल अग्नि मे प्रविष्ट हुई थी।[5]

हर्षचरित् से विदित होता है कि प्रभाकरवर्द्धन की मृत्यु के पहले ही उसकी पत्नी यशोमती अग्नि मे प्रवेश का चुकी थी। परवर्ती व्यवस्थाकारों ने भी सती प्रथा की प्रशंसा की है। कृत्यकल्पतरू में ब्रह्मपुराण का उद्धरण है कि पति के मरने पर सती स्त्रियों की दूसरी गति नहीं और मर्तृ वियोग से उत्पन्न दाह का दूसरा कोई शमन नहीं है।[6] यदि पति देशान्तर में मरे तो साध्वी स्त्री उसकी पादुकाएँ अपने हृदय से लगाकर तथा पवित्र होकर अग्नि में प्रवेश करें।[7]

विज्ञानेश्वर ने मेधातिथि का विरोध करते हुए सती प्रथा को सभी वर्णों के लिए निर्देशित किया था।

एक ओर कुछ शास्त्रकारों ने सती प्रथा का विरोध किया तो वहीं दूसरी ओर इस प्रथा के सम्बन्ध में जो उद्धरण मिलते हैं, वे अत्यधिक संदिग्ध हैं। ऋग्वेद में आए एक मन्त्र को लेकर मतभेद है कि उनमें अग्ने शब्द का प्रयोग हुआ है या अग्रे शब्द का। वस्तुतः इसका अर्थ यह है कि स्त्री अपने मृत पति के शव के साथ लेटती है, तत्पश्चात् उसे कहा जाता है– नारी उठो और पुनः इस संसार में आओ। इस अंश के आधार पर माना गया है कि सती प्रथा का प्रारम्भ वैदिक काल से हुआ है।

[3] Gupta Inscriptious (or corpus inscribtioum indicarum) J.F. Fleet 3.83
[4] विष्णु पु0 5/38/2
[5] वही, 5/38/3
[6] ब्रह्मपुराण का उद्धरण कृत्यकल्पतरू, पृ0 634 में।
[7] वही

इसी प्रकार सती प्रथा से सम्बन्धित अर्थ व्यंजित करने वाले उत्तरवैदिक कालीन साहित्य के कई उद्धरण मिलते हैं।[8] महाकाव्य कालीन ग्रन्थों में इस प्रथा का उल्लेख मिलता है परन्तु रामायण में दशरथ के मरने पर उनकी किसी भी पत्नी के सती होने का कोई संकेत नहीं है। वस्तुतः उनकी कोई रानी सती नहीं हुई। ऐसे ही महाभारत मे भीं सती प्रथा का संकेत मिलता है। महाराज पाण्डु की मृत्यु होने पर कुन्ती सती नहीं हुई थी, लेकिन माद्री ने अन्वारोहण किया था।

'तत्रेन वितामिस्थं माद्री समन्वाहरोह।'[9]

कृष्ण के पिता वासुदेव की मृत्यु होने पर उनकी चार पत्नियों देवकी, मुद्रा, रोहिणी और मदिरा ने सहमरण किया था।[10] ग्रीक इतिहासकारों ने भी सती प्रथा का विरोध किया है। मध्यकालीन टीकाकार मेधातिथि ने सती प्रथा को आत्महत्या बताते हुए कहा है कि अपने पूरे जीवन में कर्तव्य का पालन करने के पूर्व इस संसार का बलात् त्याग नहीं करना चाहिए।[11]

देवणभट्ट ने इस प्रथा की निन्दा करते हुए कहा है कि सती होना विधवा के ब्रह्मचारिणी रहने की अपेक्षा अधिक जघन्य है।[12] इन शास्त्रकारों और भाष्यकारों के पूर्व महाकवि बाण ने भी सती प्रथा का कड़ा विरोध किया और इस कार्य को जघन्य बताते हुए भर्त्सना की है। उनका मत है कि स्त्री सती होकर आत्महत्या करती है। इस पाप के कारण वह नरक में गमन करती है।[13] महानिर्वाणतन्त्र के अनुसार मोह के वशीभूत होकर वितारोहण करने वाली नारी नरकगामिनी होती है।[14]

---

[8] तैत्तिरीय सं0– विल्सन्स वर्क 2, पृ0 295–96
[9] महाभारत आदि पर्व, 95/65
[10] वही, 17/7/8–24
[11] मेधातिथि, मनु0 8/156/7
[12] स्मृति चन्द्रिका व्यवहार काण्ड, पृ0 598
[13] कादम्बरी पूर्वार्द्ध पृ0 308
[14] महानिर्वाणतन्त्र, 10/79

'मोहाद्भर्तृहश्चितारोहाद्भवेन्नरवगामिनी।'

इस प्रकार सती प्रथा के विरोध के बावजूद अन्धविश्वास की जड़े शहराने के कारण इसका प्रभाव बराबर बना रहा।

भारत में सती प्रथा कब से प्रारम्भ हुई, यह विवादास्पद है। पूर्ववैदिक और उत्तरवैदिक साहित्य के आधार पर यह कहा गया है कि सती प्रथा का प्रारम्भ आर्यों के प्रारम्भिक जीवन काल से हुआ। स्ट्रेबों ने तक्षशिला की स्त्रियों के लिए लिखा है कि वे मृत पति के साथ चिता में जलती थी।[15] सिकन्दर के आक्रमण के समय पंजाब में भी सती प्रथा का प्रचलन था।[16] अतः सती प्रथा के ऐतिहासिक उदाहरण चौथी सदी ई0पू0 से ही मिलते हैं, जिसका वर्णन यूनानी लेखकों ने किया है।

कालिदास ने इस प्रथा का संकेत 'पंतिवर्त्ममा' पद द्वारा किया है।[17] कुमारसम्भव के अनसुार सती धर्म प्राणिमात्र और चेतनाहीनों के लिए भी स्वाभाविक था।[18] वात्स्यायन कामसूत्र में उल्लिखित है कि नर्तकियाँ अपने प्रेमियों को झूठा आश्वासन दिया करती थीं।[19]

इन अभिलेखों के प्रमाणों से यह स्पष्ट रूप से प्रमाणित होता है कि सभा में सती प्रथा का प्रचलन था, किन्तु यह विशेषकर राजपरिवार और अभिजात वर्ग में ही अधिक प्रचलित थी, लेकिन बाद में इसका प्रचलन जन–साधारण में भी यदाकदा होने लगा और धर्मभीरू जनता इस प्रथा की अनुगामिनी बन गई।

---

[15] Invesion of India by Alexander the Great as Described by Arrian, Westminster, 1893, P. 69-70
[16] वही
[17] कालिदास, कुमारसम्भव, 4/73, 4/35–36
[18] वही
[19] कामसूत्र , 6/2/53